Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

हाशिये का पुनर्लेखन: बाबूराव बागुल और दलित यथार्थवाद की राजनीति

डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड

आदर्श महाविद्यालय उमरगा, तालुका उमरगा, जिल्हा धाराशिव,महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author: *डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19084655

सारांश

बाबूराव बागुल भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण नाम हैं, और उन्होंने मराठी साहित्यिक कार्यों में एक विशेष स्थान हासिल किया है। आंबेडकरवादी साहित्य के लिए एक प्रमुख मराठी लेखक और कवि के रूप में पहचाने जाने वाले, बाबूराव बागुल को महाराष्ट्र में दलित साहित्यिक आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति माना जाता है। उनके लेखन ने मराठी साहित्य में एक विद्रोही उत्सव की शुरुआत को चिह्नित किया। उनकी कहानियाँ और उपन्यास, जैसे "लघु कथाएँ" और "उपन्यास", समाज के बाहरी इलाके में रहने वाले हाशिए पर रहने वाले समुदायों की सामाजिक वास्तविकताओं, भावनाओं और अनुभवों को दर्शाते हैं। ये आख्यान अक्सर दलित अनुभवों, सामाजिक न्याय, संघर्षों और उनके जीवन के विभिन्न मुद्दों को दर्शाते हैं। बाबूराव बागुल की साहित्यिक कृतियों के कुछ प्रमुख व्यक्तित्व और पहलू नीचे दिए गए हैं। बाबूराव रामजी बागुल (1930-2008) महाराष्ट्र के एक महत्वपूर्ण मराठी लेखक थे और आधुनिक मराठी साहित्य और भारतीय लघु कथाओं के विकास में एक प्रमुख व्यक्ति थे। 17 जुलाई, 1930 को नासिक में जन्मे बागुल ने अपनी हाई स्कूल की शिक्षा पूरी की और फिर लेखन के लिए समय देने के साथ-साथ विभिन्न नौकरियों में लगे रहे। उनका पहला संग्रह, "जे*व्हा* मी जा*त* चोरली हो*ती*" (1963), (जब मैं जाति को *चुराया* था) मराठी साहित्य में एक मौलिक कृति बन गया, जिसने सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डाला और उत्पीड़ितों के आख्यानों में एक मौलिक पाठ बन गया। यह *शोधालेख* बाबूराव बागुल की लघु कथाओं में व्यक्तियों के चित्रण पर केंद्रित है, विशेष रूप से उनके संग्रह "मरन स्वस्त होत आहे" "मौत सस्ती हो रही है" मराठी में लिखा हूआ उपन्यास पर आधारित है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 26-02-2026
- **Published:** 18-03-2026
- **MRR:**4(3); 2026: 249-252
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड. हाशिये का पुनर्लेखन: बाबूराव बागुल और दलित यथार्थवाद की राजनीति. इंडियन जर्नल ऑफ मॉडर्न रिसर्च रिव्यू. 2026;4(3):249-252.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, बाबूराव बागुल, सौंदर्यशास्त्र, दलित साहित्य, भारतीय दलित साहित्य, कथा साहित्य, अस्पृश्यता, घृणा, मानवता, समानता।

© 2026 डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

बाबूराव बागुल आंबेडकरवादी-दलित आंदोलन के एक प्रमुख व्यक्ति थे और उनके लेखन में हाशिए पर पड़े समाज के संघर्षों को दर्शाया गया था। बाबासाहेब आंबेडकर, ज्योतिराव फुले और कार्ल मार्क्स के विचारों से प्रभावित होकर वे दलित आंदोलन में एक प्रभावशाली विचारक बन गए। 1972 में प्रकाशित पैंथर के घोषणापत्र की घोषणा और महाड में 'आधुनिक साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका ने उनके साहित्यिक और सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव को उजागर किया। 26 मार्च, 2008 को अपनी मृत्यु तक, बागुल ने हाशिए पर रहने वाले लोगों के जीवन के बारे में लिखना जारी रखा। उनके योगदान को मान्यता देते हुए, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय ने बाबूराव बागुल गौरव पुरस्कार की स्थापना की। उनका लघु कहानी संग्रह "मौत सस्ती हो रही है" 1969 में प्रकाशित हुआ, जिसने मराठी साहित्य में कहानियों की एक नई लहर का परिचय दिया। बागुल के लेखन ने दलित लेखकों को मराठी साहित्य में एक नया दृष्टिकोण लाने के लिए प्रेरित किया।

बाबूराव बागुल की कहानियां अस्तित्व के संघर्ष के सरल विषय को छूती हैं, साथ ही विभिन्न दिशाओं को एक सामंजस्यपूर्ण कथा में बुनकर उत्कृष्टता के शिखर पर भी कब्जा करती हैं। उनकी कहानियां अलग-अलग दिशाओं में बहती हैं, लेकिन हमेशा अलग-अलग पात्रों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, उन्हें प्रतीकात्मक और विचारोत्तेजक तरीके से प्रस्तुत करती हैं। लेखन के अवशेषों से व्युत्पन्न उनकी कहानियों का व्यापक विषय परिस्थितियों के कारण बिखरा हुआ है। जबकि उनका लेखन विषयों से बंधा नहीं होना चाहिए, बागुल ने अपने लिए जिस भूमिका की कल्पना की थी, वह क्रांतिकारी विचारों को गति देने और मूल भारतीयों की स्वतंत्रता के लिए एक विद्वानों का काम करने की थी।

साहित्यिक कार्यों में, पात्र ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कहानी कहने, बोलने, सोचने और अन्य पात्रों के साथ बातचीत करने में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, चाहे वे काल्पनिक हों या वास्तविक। कहानियों में पात्रों को देखते समय, व्यक्तियों की पहचान उनके नाम से नहीं बल्कि कहानी में उनके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं से की जाती है, क्योंकि प्रत्येक चरित्र को विशिष्ट लक्षणों और विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है। अंग्रेजी में, उन्हें 'वर्ण' के रूप में संदर्भित किया जाता है, जो मानव, पशु, वस्तु या कोई अमूर्त अवधारणा हो सकती है। इसी तरह, मानव समाज में, व्यक्तियों को पात्रों के रूप में संबोधित किया जाता है, जिसमें पुरुष और महिला दोनों पात्रों पर विचार किया जाता है। पात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, जैसे कि उच्च, निम्न और मध्यम, या एक विशिष्ट सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से। उन्हें उनकी जाति, जनजाति या किसी अन्य परिभाषित विशेषता के आधार पर भी पहचाना जा सकता है।

एक व्यक्ति किसी भी कहानी का केंद्रीय बिंदु होता है। कथा उनके इर्द-गिर्द सामने आती है। पाठक इस व्यक्ति के माध्यम से कहानी के साथ संबंध बनाता है। उनकी भावनाएँ, संघर्ष, सफलताएँ और असफलताएँ कहानी को जीवंत बनाती हैं और भावनात्मक बंधन बनाती हैं। व्यक्ति लेखक के संदेश, विचारों और सामाजिक टिप्पणी के लिए एक वाहन के रूप में कार्य करता है।

एक व्यक्ति का स्वभाव मुख्य रूप से दो प्रकार का हो सकता है - स्थिर व्यक्तित्व: ऐसा व्यक्ति कहानी की शुरुआत से अंत तक एक जैसा रहता है। उनकी प्रकृति, विचार और व्यवहार में मूलभूत परिवर्तन नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, एक लालची चाचा, एक वफादार नौकर। व्यक्तित्व का विकास: ऐसा व्यक्ति कहानी में अनुभवों के कारण बदल जाता है। उनके दृष्टिकोण से, व्यक्तित्व या नैतिकता महत्वपूर्ण हो जाती है। उदाहरण के लिए, एक बहादुर युवा योद्धा उभरता है, या एक घमंडी व्यक्ति विनम्र हो जाता है। इसके साथ ही किसी व्यक्ति के स्वभाव को भी इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे कि एक सपाट चरित्र जो एक आयामी व्यक्ति है। उनके पास एक ही विशेषता है (जैसे, चापलूसी, क्रोधित) जो मजबूत है। वे कहानी में केवल एक ही कार्य करते हैं। गोल पात्र बहुआयामी लोग होते हैं। उनमें कई गुण, जटिल भावनाएं और आंतरिक संघर्ष होते हैं। वे दुनिया में असली लोगों के रूप में दिखाई देते हैं।

"मौत सस्ती हो रही है" (कहानियों के संग्रह से), बाबूराव बागुल की कहानियों का संग्रह "मारन स्वास्त होता अहे" हाशिए पर पड़े और उपेक्षित 'व्यक्तियों' के संक्षिप्त और गहन अध्ययन का एक सफल प्रयास है। ये कहानियाँ एक सम्मोहक संग्रह बनाने के लिए एक साथ आती हैं।

एक व्यक्ति और एक कहानी के बीच का रिश्ता अविभाज्य है। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। किसी व्यक्ति की इच्छाएं, निर्णय और कार्य कहानी को गति देते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को किसी चीज़ (इच्छा) की आवश्यकता होती है, तो वे एक यात्रा (क्रिया) पर निकलते हैं, और बाधाएं उत्पन्न होती हैं (कहानी)। व्यक्ति के संघर्षों से ही कहानी का दिल बनता है। कहानी का मुख्य विचार (विषय) चरित्र के अनुभवों के माध्यम से पाठक तक पहुंचाया जाता है। उदाहरण के लिए, "सत्य की विजय" विषय एक सत्य-साधक के संघर्षों में स्पष्ट था। पाठक एक चरित्र के साथ सहानुभूति रखता है, उनसे प्यार करता है और उनके लिए करुणा महसूस करता है। इन भावनात्मक संबंधों के माध्यम से, पाठक कहानी पढ़ने के लिए प्रेरित होता है। एक व्यक्ति कहानी में सिर्फ एक चरित्र नहीं है बल्कि कहानी की आत्मा है। कहानी चरित्र को दिल, भावना और मानवीय चेहरा प्रदान करती है। एक अच्छा, जीवंत चरित्र एक कहानी को अमर बना सकता है।

'लुटालुट' एक ऐसी कहानी है जिसमें वंचला, पुतली, सोना और सिद्राप्पा जैसे किरदारों को दिखाया गया है। जीवन की कहानी वंचला के चरित्र के माध्यम से कही गई है। वह कहती हैं, "मेरी ओर से कोई गलती किए बिना, मेरी नई गाड़ी को एक नायिका ने छीन लिया क्योंकि उसकी शादी में जो जमीन गिरवी रखी गई थी, वह मेरे लिए किसी भी अन्य चीज़ से अधिक कीमती थी। इसे वापस पाने के लिए, मैं पैसा कमाने के लिए मुंबई आया था। भले ही मैंने ज्यादा पैसा नहीं कमाया, लेकिन मैं मुंबई में नहीं रह सका। वह हमेशा मुझे पीटता था। यही कारण है कि मेरी जमीन आपकी वजह से खो गई।

"अंत में, वह अपनी बहन को देखने के लिए गांव जाता है, लेकिन जो चला गया है वह वापस नहीं आ रहा है। उसने उस बहन को मुझे बेच दिया था। वह उसकी बहन नहीं थी, बल्कि एक नायिका थी। जब गंगू उसे देखती है, तो वह कहती है, "तुम्हारे पिता नहीं - तुम्हारे पिता!" [१] गंगू, जिसके पास संयम की भावना नहीं थी, यह कहने के बाद ही रुकने के लिए मजबूर हो गई। वंचला की यादों का तूफान उसके दिल को धड़कने लगा, जिससे वह बेचैन हो गई। अपने जीजा सोनू को सफल बनाने का सपना धूमिल होने लगा। इस तरह पाठक को गंगू के प्रति सहानुभूति महसूस होती है। वर्तमान पंक्ति के माध्यम से गंगू के चरित्र को चित्रित किया गया है, लेकिन इसके साथ ही दयनीय स्थिति

© 2026 डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भी दिखाई देती है। ऐसे दोहरे तरीके से बागुल ने किरदार को निभाया है।

दूसरे क्षण में, एक व्यक्ति बागुल की कहानी शैली के माध्यम से किसी व्यक्ति की रेखा को आकार देने के अपने अनुभव को व्यक्त करता है, वह करुणा जो बागुल की कहानी में प्रमुखता से दिखाई देगी, समीक्षकों द्वारा उनकी भाषा में व्यक्त की गई विशिष्टता।

"गरीबी, भूख, छुआछूत, अन्याय, उत्पीड़न और दलितों के जीवन की वर्तमान स्थिति ने समाज में संकट की स्थिति का उदय किया है, जो मौजूदा सामाजिक व्यवस्था और उसकी संरचनाओं के परिवर्तन की इच्छा रखता है। इसके साथ आने वाली बाधाओं के जवाब में, इसके खिलाफ विद्रोह, एकजुटता की भावना या क्रांतिकारी विद्रोह होता है। यह आज के दलितों की कहानी है। [२]

बाबूराव बागुल की कहानियों में रोजमर्रा की जिंदगी के संघर्षों, मानवीय भावनाओं और सामाजिक वास्तविकताओं के चित्रण को दर्शाया गया है। उनके लेखन में एक गहराई है जो पाठकों को चिंतन करने के लिए प्रेरित करती है। गरीबी के अपने अनुभवों के माध्यम से, वह भावनाओं को व्यक्त करता है, विशेष रूप से स्वार्थ, दुःख और हताशा का मिश्रण, जो उसकी कहानियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। उनके पत्रों की मांगें और उनके पीछे की विचार प्रक्रिया आधुनिक समाज में भौतिकता की ओर झुकी हुई मानसिक नाजुकता का संकेत दर्शाती है। भले ही की गई मांगें प्राप्त करने योग्य लग सकती हैं, लेकिन वे उनकी भावनात्मक और वित्तीय जरूरतों का प्रतिबिंब हैं। उनके पत्रों में प्रतिक्रिया, जहां वह दर्द और पीड़ा का अनुभव करते हैं, मानव मन की पेचीदगियों को प्रकट करती है। बागुल की कहानियाँ पात्रों के आंतरिक संघर्षों के बारे में स्पष्ट जानकारी प्रदान करती हैं। बागुल की कहानियों को पढ़ते समय पाठकों को उनकी भावनाओं में डूबने का अवसर मिलता है। इस संदर्भ में, बागुल के लेखन में छिपा हुआ तनाव उनके मन के भीतर की उथल-पुथल का संकेत है। कुल मिलाकर, बाबूराव बागुल की कहानियाँ विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालती हैं और मानवीय रिश्तों की जटिलताओं पर प्रकाश डालती हैं। अपने पत्रों के माध्यम से, वह ऐसे विचारों को प्रकट करते हैं जो उनके लेखन की गहराई और जटिलता को प्रदर्शित करते हैं।

"मैंने नाजुक ढंग से उसका हाथ पकड़ लिया और उससे कहा कि वह एक पंख की तरह नाजुक थी, जिसके कान सुनहरे झुमके और पतली कमर से सजे हुए थे। उसके नाम से यही पता चलता है। फिर भी, मैंने जल्दी से उसे बहत्तर रुपये भेज दिए। और मेरे लिए...' स्वार्थी मांगों, निर्मम लूटपाट से भरा और धोखे, दुख और दर्द से भरा यह पत्र चेहरे पर तमाचा जैसा लगा। मैंने कितनी भी मेहनत कर ली, लेकिन मुझे इसे पढ़ने की ताकत नहीं मिली। उसकी लापरवाही से मुझ पर यह हावी होने लगा."[३]

बाबूराव बागुल एक प्रतिभाशाली दलित लेखक हैं जो जीवन के अनुभवों का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं जो अत्यधिक प्रभावशाली और अद्वितीय हैं। अपनी कहानियों के माध्यम से, वह हाशिए पर, समाज द्वारा उत्पीड़ित और मानवाधिकारों से वंचित लोगों के सामने आने वाले संघर्षों और चुनौतियों को चित्रित करते हैं। उनकी कहानियों के पात्र न केवल असहाय और उत्पीड़ित हैं, बल्कि वे वापस लड़ते भी हैं। उन्हें जीवित रहने के संघर्षों की स्पष्ट समझ है। इसलिए, वे केवल अपने भाग्य के भाग्य को चित्रित नहीं करते हैं। वे पारंपरिक और पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देते हैं और नए अर्थ सामने लाते हैं। वे सतर्क और जागरूक व्यक्ति हैं। बागुल की कहानियों के पात्र जीवन की ताकत और दलित जीवन संघर्षों के जीवंत कलात्मक कौशल के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।

जो व्यक्ति अंततः अपनी पूरी कहानी की शैली में खुद को व्यक्त करते हैं, वे अंततः एक मानव जाति हैं, इसलिए कहानी के विभिन्न रूपों की परवाह किए बिना, वे अंततः इंसान बन जाते हैं और लिखते हैं, "मैं सदियों पुराने सपनों का खोजकर्ता हूं, उभरते जीवन का व्याख्याता हूं। गरीबी, दुःख और विनम्रता उनके कुख्यात चंगुल से मुक्त करती है। पुरानी दुनिया में जाने के लिए मौत को बुलाते हैं। लिखते हैं: मौत!

"तुम आने वाले हो; लेकिन चेतना के काल्पनिक वृक्ष से स्वर्गीय पक्षी स्वर्ग में उड़ान भरने से पहले, जल्दी से आएं। यदि आप देरी करते हैं, तो मेरी जलती हुई आत्मा के कोमल कर्म प्रज्वलित हो जाएंगे, और पूर्णता का क्षण हृदय में एक चमकते हुए सदियों पुराने घाव की तरह चमकेगा, कभी शुद्ध और अच्छा, कभी कबीर की तरह, कभी उमर खय्याम की तरह, बादल की तरह भटकता हुआ, कभी पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर, गूंजने वाले गीत गाता है। [४]

कहानियों का शीर्षक-आधारित संग्रह, कहानी "बगुला" जया के संघर्ष को दर्शाती है, जो एक चरित्र है जो प्रसिद्ध बेरोजगार व्यक्तित्व का प्रतीक है। अहसास के एक क्षण में, वह अपने जीवन की उपयुक्त घटनाओं को प्रकाश में लाती है, और इस मूल कहानी में चित्रित चरित्र मृत्यु के कगार पर है।

बागुल की कहानियों के पात्र साहित्य के प्रसिद्ध, स्थापित पठन को स्वीकार नहीं करते हैं। साहित्य की प्रस्तुति में साहित्य का पाठ 'सामान्य ज्ञान' की शैली में 'एंटोनियो ग्राम्शी' [५] के शब्दों में है। सामान्य ज्ञान की शैली में साहित्य का पढ़ना साहित्य की शैली में प्रस्तुत साहित्य के पढ़ने पर आधारित है, जिसका अर्थ है साहित्य को इस तरह से पढ़ना जो व्यक्तिगत कार्यों के आधिपत्य नैतिक मूल्यों का समर्थन करता है। जब मैं कहता हूं कि प्रस्तुत पठन शैली इस प्रकार है, तो इसका अर्थ है कि साहित्य पढ़ते समय, किसी को इस विश्वास की सराहना करनी चाहिए कि साहित्य नैतिकता/मूल्यों को सिखाता है और साहित्यिक पहलुओं (भाषण और लेखन शैली के अलंकार) की उपेक्षा करता है। अनुवादक मूल पाठ को पढ़ने को भी प्रस्तुत करते हैं और पांडु की मां के अनैतिक संबंधों का समर्थन करने के साथ-साथ अलंकारिक आंकड़ों के उपयोग को भी नजरअंदाज करते हैं क्योंकि वह उसे प्रिय है। अनुवादक उसे 'अशिक्षित विधवा' के रूप में संबोधित करता है और एक संवाद बनाता है जहां वह कहती है कि उसने अपने बच्चों के लिए अपने जीवन की खुशियों का बलिदान दिया है। दिलीप चित्रे ने संवादिनी मैगज़ीन में भी बात की और साथ ही बागुल की किताब के ब्लर्ब में भी यही व्याख्या संलग्न की गई है, वे कहते हैं,

"बाबूराव ने अपनी अवलोकनों और प्रतिभाओं के माध्यम से गरीबों के दैनिक संघर्षों की हिंसा और स्वार्थ को दर्शाया है। मानवीय पतन की अत्यंत ज्वलंत और सुरम्य कहानियाँ बाबूराव के आख्यानों की पहचान हैं। यथार्थवादी चित्रण के असामान्य पैटर्न उनमें पाए जाते हैं। मनोरंजन कभी भी बाबूराव के लेखन का उद्देश्य नहीं था, और यहां तक कि उनके रचनात्मक खेलों के आकर्षक आंकड़े भी उन्हें पसंद नहीं आए। बाबूराव ने कभी भी अंबेडकर के विचारों से खुद को अलग नहीं किया, लेकिन कला के परिप्रेक्ष्य के रूप में, उनका निर्भीक और परिष्कृत स्पर्श हमेशा स्थिर रहा। गांव की दीवारें, शहर की सबसे अंधेरी गलियों में वेश्याएं, बेकार लोग, बेकार लोग, और जो मानवता की गहराई के

© 2026 डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

कारण अपरिवर्तनीय रूप से पशुवत बन गए हैं, ये बाबूराव के साहित्य में दर्शाए गए मानवीय विचार हैं। कलात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से कहीं और पनपने की संभावना वाली मानवीय भावनाओं को बाबुराव के साहित्य में विकृत, नकारात्मक रूप में चित्रित किया गया है। वे पाठक को आराम देने की कोशिश नहीं करते हैं, बल्कि विचार को भड़काने की कोशिश करते हैं। [६]

निष्कर्ष

बागुल भारतीय दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं; उनकी कहानियां भारतीय दलित साहित्य के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कहानियाँ एक शक्तिशाली भाषा में जीवन की कठोर वास्तविकताओं के बारे में बताती हैं, शिक्षा, समानता, आत्म-सम्मान और संघर्ष जैसे मुद्दों को संबोधित करती हैं। अपने किरदारों के माध्यम से बागुल समाज में असमानताओं और भेदभाव के साथ-साथ दलित समुदाय के अनुभवों पर प्रकाश डालते हैं।

साहित्य में बागुल की कहानियाँ सामाजिक विचारों, संघर्षों और परिवर्तनों के आपस में जुड़े हुए जाल को दर्शाती हैं। अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने सफलतापूर्वक व्यक्तित्व और संवेदनशीलता में सामंजस्य स्थापित किया है, पाठकों को सामुदायिक चिंताओं पर ध्यान देने और उनमें सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया है। इस दृष्टिकोण से बागुल की साहित्यिक यात्रा सामाजिक आत्मनिरीक्षण और परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बन जाती है।

संदर्भ

1. बागुल, बाबूराव बागुल | बाबुराव. "मरन स्वस्त होत आहे" "मौत सस्ती हो रही है", [01 जनवरी, 2005] लोकवांगमय गृह, 2005, पृ. ३.
2. मेश्राम, योगेंद्र। दलित साहित्य उद्गम और विकास - दलित साहित्य उद्गम और विकास - 96, पृ. २२६
3. बागुल, बागुल. "मौत सस्ती हो रही है" पृ. २
4. फडके, भालचंद्र, दलित साहित्य वेदना व विद्रोह, श्रीविद्या प्रकाशन. जनवरी, २०१७ , पृ. ९७
5. ग्राम्शी, एंटोनियो. जेल नोटबुक. कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2011, पृ. १७६

चित्रे, दिलीप. बागूल, बाबुराव, "मौत सस्ती हो रही है", पृ. मल पृष्ठ

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड आदर्श महाविद्यालय, उमरगा (जिल्हा धाराशिव, महाराष्ट्र) में कार्यरत एक समर्पित शिक्षाविद् और शोधकर्ता हैं। वे उच्च शिक्षा और शोध गतिविधियों में सक्रिय रूप से योगदान देते हैं। उनका मुख्य ध्यान अकादमिक उत्कृष्टता, छात्र मार्गदर्शन तथा सामाजिक और शैक्षणिक विकास से जुड़े विषयों पर केंद्रित है।

© 2026 डॉ. नितीन वामनराव गायकवाड. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/